राजनीतिक आधुनिकीकरण - Dr. Akhlakh Ahmad

राजनीतिक आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो साधनों के विवेकसम्मत प्रयोग पर आधारित है तथा जिसका लक्ष्य आधुनिक समाज की स्थापना करना है। विकासशील देशों के संदर्भ में यह सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया का नाम है। यह प्राचीन से नवीनता की ओर समाज का प्रस्थान है। यह एक बहुमुखी प्रक्रिया है जो, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक सभी क्षेत्रों में दृष्टिगोचर है। लरनर ने "विवेकपूर्ण परिवर्तन की प्रक्रिया को ही आधुनिकीकरण का नाम दिया है।" स्मैलर ने किसी राष्ट्र की आर्थिक उन्नति को आधुनिकीकरण माना। हंटिंग्टन के अनुसार " आधुनिकीकरण एक बहुदलीय प्रक्रिया है जो मानव के गतिविधियों व विचारों के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन से सम्बंधित है।

उक्त के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक आधुनिकीकरण एक विशेष प्रकार के राजनीतिक परिवर्तन से सम्बंधित है। इस राजनीतिक परिवर्तन का सम्बंध का अनुभव पश्चिमी राष्ट्रों का 1760 - 1830 के बीच इंग्लैंड में होने वाली औद्योगिक क्रांति के बाद हुई। हालांकि इसकी चरम परिणति फ्रांसीसी राज्य क्रांति में हुई। ये उपलब्धियाँ है जनतांत्रिकरण, सामाजिक एवं राजनीतिक समानता, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्र एवं राज्य निर्माण के प्रयासों के फलस्वरूप राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना तथा पर्यावरण जनित तनावों का सामना करने एवं उनसे उत्पन्न समस्याओं का समाधान खोजने की राजनीतिक पद्धति की क्षमता।

राजनीतिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को

Scanned with CamScanner

विश्वव्यापी एवं अनिवार्य मानकर पश्चिमी विद्वानों ने विश्व के विभिन्न समाजों को तीन वर्गों में विभाजित किया है।

प्रथम, जिसमें आधुनिकीकरण की प्रक्रिया नहीं हुई है, इन समाजों को वे अविकसित या पारम्परिक कहते हैं।

दूसरे, जिसमें राजनीतिक एवं सामाजिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है किन्तु पारम्परिक मूल्य, दृष्टिकोण एवं सांस्कृतिक अवशेष अभी भी बचे हुए हैं। इन समाजों को वे विकासमान कहते हैं।

तीसरे, पश्चिम का समाज जहाँ आधुनिकीकरण की प्रक्रिया सम्पन्न हो चुकी है, इन्हें वे विकसित समाज कहते हैं।

इस विभाजन से दो ~~दृष्टिकोण~~ निष्कर्ष निकलते हैं -

i) पारम्परिक समाजों की संस्कृति एवं पारम्परिक मूल्य आधुनिकीकरण के विरोधी हैं।

ii) पश्चिमी देशों के मूल्य एवं दृष्टिकोण, जो आधुनिकता के प्रतीक हैं, विकासमान देशों के लिए अनिवार्य रूप से प्राप्य हैं, अन्यथा वे आधुनिक नहीं हो सकते।

राजनीतिक आधुनिकीकरण की विशेषताएँ -

जिन देशों में राजनीतिक आधुनिकीकरण की मात्रा अधिक है या जो आधुनिकीकृत हो चुके हैं, उनकी खास विशेषताएँ हैं।

Scanned with CamScanner

लियोनार्ड बाइन्डर ने राजनीतिक दृष्टिकोण से आधुनिकीकृत समाजों की विशेषताओं की चर्चा की है, जो निम्नवत् है-

i) तादात्म्यता में परिवर्तन - इसका मतलब है जो समाज राजनीतिक दृष्टिकोण से आधुनिकीकृत हो चुका है उसके नागरिक एवं समूहों का स्वबोध तथा राजनीतिक वस्तुओं के प्रति उनकी तादात्म्यता बदल जाती है।

2. औचित्य में परिवर्तन :- इसका आशय है राजनीतिक संस्थाओं तथा शासकों या अभिजनों के शासन करने के अधिकार के प्रति विश्वास में परिवर्तन। पारम्परिक समाजों में शासकों को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता है, शासन के पीछे दैविक कानून का समर्थन माना जाता है। इसके विपरित आधुनिकीकृत समाजों में औचित्य का आधार वास्तविकता एवं इहलौकिकता है।

3. राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन :- पारम्परिक समाजों में राजनीतिक सहभागिता में सामान्य नागरिकों या शासितों का एक योगदान रहता है। एक कारण तो इन समाजों में शासन का अभाव तथा दूसरा, निरक्षरता, गरीबी, संचार के साधनों की कमी तथा अप्रभावशीलता है। ऐसी स्थिति में इन समाजों में कुछ विशिष्ट परिवार के अभिजन तक राजनीतिक सहभागिता सीमित हो जाती है। राजनीतिक आधुनिकीकरण की उपलब्धि यही है कि राजनीतिक सहभागिता का विस्तार कुछ परिवारों की सीमा को तोड़कर अधिकांश समूहों तक हो जाता है।

4. <u>राजनीतिक लाभों के वितरण में परिवर्तन</u> :- पारम्परिक समाजों की भाँति राजनीतिक लाभ जाति, धर्म, खानदान की सदस्यता के आधार पर न होकर व्यक्तिगत योग्यता एवं उपलब्धियों के पर मिलता है। आधुनिकीकृत समाज में प्रतियोगिता में सफलता विश्वविद्यालयों की उपलब्धियों एवं अन्य व्यक्तिगत उपलब्धियों के आधार पर नियुक्तियाँ एवं शक्तियाँ प्राप्त होती है।

5. <u>समाज पर वैधानिक एवं प्रशासनिक नियंत्रण में परिवर्तन</u> :- (Legal)
इसका सम्बंध राज्य एवं राष्ट्रनिर्माण से है। पारम्परिक समाजों में राजनीतिक शक्ति का केन्द्रीकरण राजा, सम्राट, सामंतों के समूह तक अवरुद्ध था किन्तु देशों के सुदूर कोनों में उनका प्रभाव कम था। आधुनिकीकृत समाज राष्ट्रीय राज्य का समाज है जिसका मतलब है समाज के नागरिकों की आपसी भिन्नता के बावजूद उनमें एक राष्ट्र, एक राजनीतिक लक्ष्य तथा कर्तव्य की भावना का विस्तार हो जाता।

विकासशील देशों में राजनीतिक आधुनिकीकरण की समस्याएँ —

i) आज इन देशों में दो संस्कृतियों का संघर्ष चल रहा है। एक इनकी पारम्परिक संस्कृति है तथा दूसरी आधुनिक संस्कृति जो पश्चिमी संस्कृति का उत्पाद (Bye product) है। इन दोनों संस्कृतियों के संघर्ष में ये देश आधुनिकीकरण के दृष्टिकोण से दिशाहीन हो जाते है।

ii) विकासशील देशों में समस्त राजनीतिक आत्मबोध की कमी का अभाव हो सकता है। इसका एक कारण यह है कि इन देशों में कई भूतपूर्व उपनिवेश थे जो राष्ट्रीय आन्दोलन स्वतंत्र हुए। उपनिवेशवादी सत्ता हटने के बाद इन देशों के नेतृत्व ने यह समझने में गलती की है या कठिनाई महसूस की है कि उन्हें अपने देश के प्रगति के लिए कौन सा मार्ग चुनना है।

iii) विचारधारा का चुनाव भी बड़ी समस्या है। अधिकांश देशों में निश्चित विचारधारा को स्वीकार कर लिया गया किन्तु इनके सही से पालन से आधुनिकीकरण से सम्बंधित समस्याएँ उत्पन्न हुई।

iv) राजनीतिक आधुनिकीकरण के संदर्भ में राष्ट्रीय एकीकरण भी एक समस्या है क्योंकि इन देशों में अधिकांश बहुसांप्रदायिक तथा बहुधार्मिक है।

v) अन्त में, विकासशील तथा गैर-पश्चिमी देशों के राजनीतिक आधुनिकीकरण के संदर्भ में एक समस्या समस्त एवं ईमानदार नागरिक सेवा या नौकरशाही की समस्या है। इनमें से कई देशों में नौकरशाही इतनी विकसित तथा सक्षम नहीं है कि वह शीर्ष नेतृत्व को मदद पहुँचा सके, और समस्याओं का समाधान कर सके।

राजनीतिक आधुनिकीकरण का अध्ययन स्पष्टतः राजनीतिक समाज वैज्ञानिक विश्लेषण का विभिन्न रूप है यह विचार नए राजनीति वैज्ञानिकों द्वारा लाभदायक उपकरण के रूप में प्रयुक्त होने लगा है।